International Journal of Applied Research 2015; 1(11): 862-864

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 862-864
www.allresearchjournal.com
Received: 01-08-2015
Accepted: 02-09-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

आधे अधूरे नाटक में सम्वाद–योजना

डॉ. शिवदत्त शर्मा

नाटक अभिव्यक्ति की सशक्त विधा है। हिन्दी नाटकों में सम्प्रेषणीयता एवं रंगमंच की दृष्टि से आधे–अधूरे नाटक अद्वितीय है। नाटक के स्वरूप–विधान में संवादों को मूल–विधायक तत्व माना जाता है। ऐंसा इसलिए कि नाटक के समस्त कार्य–व्यापार का सम्पादन सम्वाद योजना द्वारा ही किया जाता है। यद्यपि प्रत्येक साहित्यिक विधा में सम्वादों का महत्वपूर्ण स्थान होता हे किन्तु कथाकार की अपेक्षा नाटककार इस मामले में कुछ अधिक प्रतिबद्ध रहता है।कथाकार अपने भावों को अपने शब्दों में भी व्यक्त कर सकता है किन्तु नाटककार ऐसा नहीं कर सकता। वह तो पात्रों और उनके सम्वादों को ही अपने भाव सम्प्रेंषण का माध्यम बना सकता है। अपनी ओर से वह जो कुछ भी कहना चाहता है पात्रों के कथनों से ही कह सकता है अपने कथनों से नहीं। इस प्रकार संवादों का सीधा संबन्ध पात्रों के चरित्र ओर कथावस्तु के विकास से है। नाटक के सम्वाद ही नाटकीयता के उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं और जो समस्या उनमें उठायी गई है उसको भी वही अभिव्यक्ति देते हैं। [1] इस प्रकार सम्वाद के बिना नाटकीय कथावस्तु निर्जीव हो जाती है।

मोहन राकेश के प्रभावशाली सम्वाद उनकी कथोपकथन सृष्टि की एक निजी विशेषता है। आधे–अधूरे नाटक के सम्वाद प्रायः विषयानुकूल, समयानुकूल, संक्षिप्त, चुटील, एवं सरस्र हैं। उनमें एक ऐसी यथार्थता है जो उन्हें प्राणवान बनाने में सहायक हुई है।

इन संवादों से रचना में नाटकीयता का मणिकंचन योग हो सकता है। कथा को गति और शक्ति संवादों से प्राप्त होती हे। कहीं–कहीं आधे–अधूरे के कथोपकथन लम्बे हो गए हैं, किन्तु इनसे कथा की गति अथवा नाटकीयता में शैथिल्य नहीं आने पाया है। वास्तव में नाटकीय समस्या को मुखर करने में ये लम्बे सम्वाद सहायक ही हुए हैं।

इस प्रकार आधे–अधूरे नाटक में प्रयुक्त संवादों के गुणों तथा विशेषताओं को हम निम्न लिखित उपशीर्षकों में विभक्त कर सकते है। यह वर्गीकरण केवल विवेचन की सुविधा के लिए किया जा रहा है।

1. स्वाभाविकता

नाटकीय संवादों में स्वाभाविकता का होना आवश्यक है। अस्वाभाविक संवाद जहां बडे अटपटे लगते हैं वहां कथा की गति को भी अवरुद्ध करते हैं। [2] अस्वाभाविक संवाद दर्शकों का ध्यान पात्रों की ओर से हटा देते हैं। इसलिए नाटककार को इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि उसका कोई भी संवाद उलजलूल न हो। आधे–अधूरे के लेखक इस तथ्य से परिचित जान पडते है। इस नाटक के संवादों में सर्वत्र स्वाभाविकता उपलब्ध होती है।

2. सरलता

नाटक के पात्रों में संवाद सरल और सहज होने चाहिएं। दुरुहता नाटक के कथ्य को प्रभावहीन बना देती है।संवादों में सरलता नाटक की अभिनेयता में भी सहायक होती है। आधे–अधूरे नाटक के संवादों में यह गुण भी सर्वत्र मिलता है। उसके संवादों में सरलता के साथ साथ चुस्ती ,चुटीलापन ,भी दिखाई देता है। बीना और जुनेजा का यह संवाद उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है। यह संवादों की सरलता का गुण आधे–अधूरे के सभी पात्रों के संवादों में मिलता है।

3. संक्षिप्तता

नाटक में दीर्घ और संक्षिप्त दोनों प्रकार के संवाद होते हैं। प्रायः संक्षिप्त संवाद योजना नाटक में उचित होती है। [3] दीर्घ संवाद योजना एक तो नाटक की कथा की गति को बोझिल कर देती हे और दूसरे एक ही पात्र को बहुत देर तक बोलते रहने से पाठक या दर्शक तंग आ जाता है।

आधे–अधूरे नाटक में अधिक संवाद संक्षिप्त ही हैं तथा कथा को गति को तीव्रता से आगे बढाने में

सहायक सिद्ध हुए हैं। मोहन राकेश ने अपने पूर्व नाटकों–आषाढ का एक दिन अथवा लहरों के राजहंस की भान्ति इस नाटक में भी अन्तिम दृष्य में लम्बे लम्बे संवाद प्रस्तुत किए हैं जो नाटक की सुन्दरता में व्यवधान डालते हैं फिर भी ऐसे संवाद अधिक नहीं हैं अतः इस नाटक में संवादों के कारण नाटक का सौन्दर्य कम नहीं हुआ है अपितु संवाद–शैली के माध्यम से नाटक के सौन्दर्य में और निखार आया है।

4. पात्रानुकूलता

आधे–अधूरे नाटक में संवादों में पात्रानुकूलता के दर्शन भी होते हैं। नाटक का प्रत्येक पात्र अपने स्तर के अनुकूल संवाद बोलता है। सावित्री एक स्वछन्द एवं आवारा स्त्री है इसलिए उसके संवादों में आवारा पन की झलक मिलती है जो पात्रानुकूल ही है। इसके साथ ही विघटनशील परिवार की यंत्रणाओं को झेलने वाली बीना के संवादों में एक बिखराव मिलता है। पुरुष महेन्द्रनाथ निठल्ला और प्रताडित व्यक्ति है इसलिए उसके संवादों में दब्बूपन का एहसास सर्वत्र उपलब्ध होता है। अशोक स्वभाव से ही विद्रोही तथा अक्खड किस्म का व्यक्ति है अतः संवाद भी उसी के अनुसार घडे गए हैं जो पात्र के स्वभाव के अनुकूल प्रतीत होते हैं।

5. प्रसंगानुकूलता

पात्रों के संवादों में पात्रानुकूलता के साथसाथ प्रसंगाानुकूलता भी अपेक्षित है। यदि पात्र प्रसंग अथवा अवसर के अनुकूल कथोपकथन नहीं हों तो संवाद थोपा हुआ अथवा अस्वाभाविक लगता है तथा संवादों के अन्दर गम्भीरता का अभाव देखा जाता है तथा संवाद एक प्रलाप ही बन कर रह जाता है। [4] वास्तव में परिस्थिति के अनुकूल ही संवाद होने चाहिएं। आधे–अधूरे नाटक के संवादों में प्रसंगाानुकूलता का विशेष ध्यान रखा गया है तथा एक भी अवसर नाटक में ऐसा नहीं आता जहां संवाद बोझिल प्रतीत होते हों।

6. गतिशीलता

गतिशीलता संवादों का एक अन्य महत्व पूर्ण गुण है। गतिशीलता से यह अभिप्रायः है कि पात्रों के संवाद नाटकीय कथा को शीघ्रता से आगे बढाने में योग दान दे सकें । यदि पात्रों के संवाद गतिशील नहीं हैं तो कथा की गति भी अवरुद्ध हो जाती है। आधे–अधूरे नाटक के संवादों में गतिशीलता अत्यन्त उच्च कोटि की है।

7. मनोरंजन पूर्णता

आधे–अधूरे नाटक में राकेश जी ने सिंघानिया के प्रसंग को जोड कर हास्य और मनोरंजन का पुट नाटक में भरने का सफल प्रयास किया है।यद्यपि इस मनोरंजकता के अन्तर्गत व्यंग्य प्रधान है किन्तु फिर भी कहीं–कहीं पर बहुत ही सुन्दर हास्य की व्यवस्था की गई है। नाटक में हास्य से जीवन्तता का एहसास होता है तथा हास्य में बनावटी पन महसूस नहीं होता । [5]

8. व्यंग्यात्मकता

आधे–अधूरे के संवादों में व्यंग्यात्मकता प्रचुर मात्रा में मिलती है। प्रायः प्रत्येक पात्र के कथन में व्यंग्यात्मकता के दर्शन होते हैं। घर के बाहिर छोटे बडे सभी पात्रों के संवाद व्यंग्य से परिपूर्ण हैं । इसलिए उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है। व्यंग्य से कथन में गति आती है तथा पाठक अथवा श्रोता संवाद की गम्भीरता को आत्म सात कर लेते हैं। [6]

9. चरित्र–प्रंकाशन की क्षमता

नाटक के संवाद ऐंसे होने चाहिएं जो पात्रों के चरित्रों का उद्घाटन कर सकने की क्षमता रखते हों। पात्रों की मनोदशा उनके आन्तरिक उहापोह को इसी प्रकार के संवादों से जाना जा सकता है। [7] आधे अधूरे नाटक में ऐसे संवादों की भी कमी नहीं है। महेन्द्रनाथ के संवाद उसके दब्बूपन, निठल्ले, और उखडे हुए व्यक्ति को उजागर करने में समर्थ है।सावित्री के संवादों में उसके आवारा पन, चरित्रहीनता, और निर्लज्जता की झांकी मिल जाती है। इसी प्रकार अशोक के संवाद उसके विद्रोही और कडवाहट भरे व्यक्तित्व को मुखर करने में पूर्णतः सफल रहे हैं।

10. प्रभावक्षमता

पात्रों के संवाद जितने अधिक प्रभावशाली होंगे उनकी रमणीयता में उतनी ही वृद्धि होगीं जिस नाटक के संवाद प्रभावी नहीं होते उसके पात्र अथवा कथानक चाहे कितने भी प्रभावी क्यों न हों वह पाठक या दर्शक को प्रभावित नही कर सकते। दूसरी ओर प्रभाव शाली संवाद घटिया कथा को भी आकर्षक बना देते हैं। आधे –अधूरे नाटक में कथोपकथन की सृष्टि परिस्थिति की सच्चाई और निश्चल हृदय की सच्ची अनुभूति से हुई है। अतः उनमें अपार बल एवं प्रभाव है। प्रस्तुतनाटक के सभी कथोपकथन सच्चाई का भावनात्मक तर्क लेकर पैदा हुए हैं। अतः उनमें एक निजी प्रभावकता और विश्वसनीयता है।

11. विश्लेषणात्मकता

नाटक में कहीं–कहीं मनोविश्लेषणात्मक संवाद भी उसकी महत्ता को बढाने में सहायक होते हैं। आधे–अधूरे नाटक में अन्तिम संवाद सावित्री और जुनेजा के संवाद मनोविश्लेषणात्मक हैं। जुनेजा तेा सावित्री और महेन्द्रनाथ के मन की गुत्थियों को सुलझााती हुई दिखाई देती है।

12. यथार्थता

आधे–अधूरे एक यथार्थवादी नाटक है, अस्तु उसमें प्रयुक्त संवादों में भी यथार्थवादिता का गुण प्रचुर मात्रा में मिलता है। प्रायः प्रत्येक पात्र अपने संवादों के द्वारा अपने आसपास के और अपने से सम्बद्ध व्यक्तियें के यथार्थ का उद्घाटन करता रहता है। यथा– अशोक सिंघानिया के विषय में जो उपहास्यास्पद संवाद बोलता है उनका यथार्थ वाद में प्रकटी करण बाद में नाटक में दिखाई इेता है।इसी प्रकार अन्य पात्रों के संवादों में यह दिखाई देता है। [8]

मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिकतम दृष्टिकोण को जगह मिली है इसमे रूढियों में बन्ध हुए नाटक को खुले मैदान मे ला कर परवर्ती नाटक कारा के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया गया है। इसके बाद जितने भी नाटक लिखे गए प्रत्येक नाटक कार मोहन राकेश की विशेषताओं को ध्यान में रख कर नाटक लेख में प्रवृत्त हुआ है। रंगमंच की दृष्टि से तो नाअक लेखन में अभूत पूर्व परिवर्तन परवर्तीनाटकों में देखा जा सकता हैं।

इस तरह उपर्युक्त प्रमुख गुणों के अतिरिक्त आधे–अधूरे के संवादों में नाटकीयता, कथवस्तु का विकासकरने की क्षमता ,चारित्रिक *विकास की क्षमता तथा भविष्यं* में घटने वाली अलक्ष्य घटनाआ के संकेत दे देने की अपूर्व क्षमता है। इस प्रकार आधे–अधूरे नाटक में प्रयुक्त संवाद अपने उपर्युक्त गुणों के कारण विशिष्ट बन गए हैंऔर मोहन राकेश के उत्कृष्ट संवाद–कौशल का प्रभाव प्रस्तुत करते हैं

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मनोमोहन घोष नाट्य–शास्त्र अनुवाद पृ 70
2. गिरीश रस्तोगी बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच पृ 43
3. केदार सिंह हिन्दी नाटक कल और आज पृ 23
4. डॉ दशरथ ओझा हिन्दी नाटक उद्भव और विकास पृ 34
5. नगेन्द आधुनिक हिन्दी नाटक पृ67

6. सरिता वशिष्ट युगबोध और हिन्दी नाटक पृ 27
7. मदनमोहन शर्मा स्वत़ंत्र्योत्तर युगीन परिप्रेक्ष्य औरनाटक पृ 59
8. मोहन राकेश आधे–अधूरे पृ 52